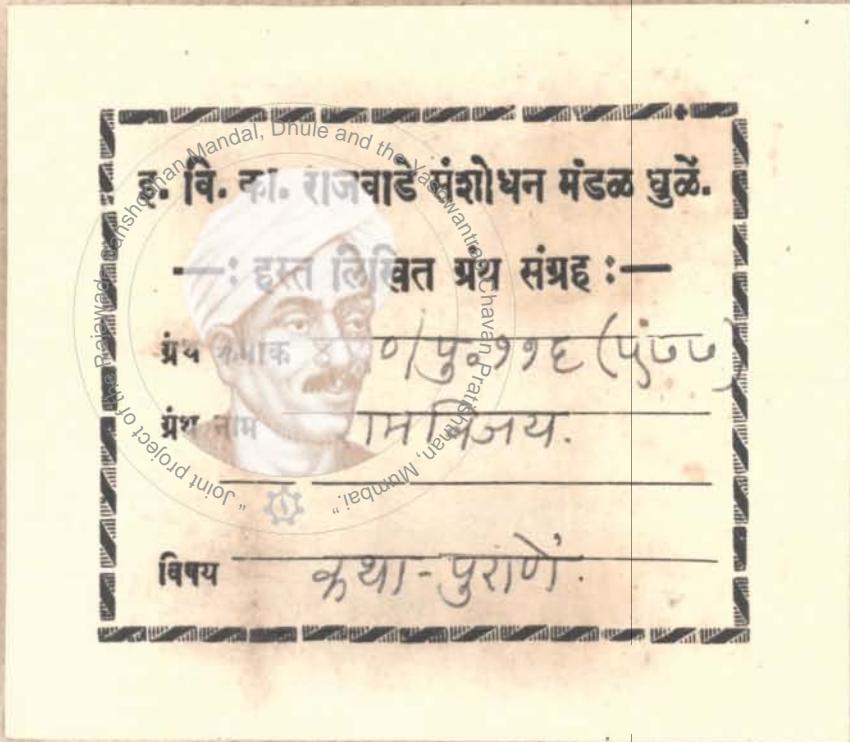
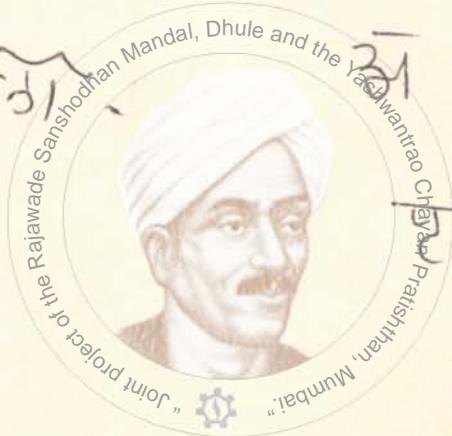


६९०/५ १८४



आद्यात्म ६८५

४. १३



१

१३.



(2)

श्रीगणेशायनमः श्रीसरस्यतीयनमः श्रीगुरुभ्योंनमः श्रीराम
 चंद्रायनमः श्रीमारुतीप्रसवनः आनमोजीपुराणपुराणा ॥ श्रीम-
 द्वासालटविलासा ॥ श्रीगांबदात्यादीनासा ॥ श्रीकृनंदाजगद्-
 दा ॥ १५७ अजयजयजव्यशापुण्ड्रिका ॥ उजआजीलाज्यास्याना
 मा ॥ भीलश्रीनहदयधिश्वासा ॥ पुण्ड्रनिंदापरासना ॥ १५८ अजय
 जयमायाचश्चायना ॥ मामालीनवीरचीजनका ॥ सन्दृच्छील
 पशीदनका ॥ नीजजनरहनकुरु ॥ अद्योऽष्ट्योऽष्ट्योऽष्ट्योऽष्ट्यो
 रन्दुर्पुरगोरा ॥ उमोबीकाशनवहनदीनकरा ॥ हेच्चीत्यरपेसु
 स्मिसाचार ॥ मनिर्विकारस्वर्दा ॥ १५९ मंगलनामकारद्वगजवह
 ना ॥ मंगलचारमिलुशेदीनमन ॥ मंगलजननीवरीदीलालेसु
 न ॥ खुसेगुणनसरस्ती ॥ पुगुन्नियोसुवेसुक्रमारबुहत ॥ पदे
 गौरनेपुरेसलाल ॥ भाकीरणसुणवाजल ॥

२८
तिनक्तहृदया छुंगी॒ इ॥ स्मिरणवि॒ अतिस्वेतांबरा॑ ॥ वौक्षासेतागला॑
स्मीरसागरा॑ ॥ द्विंनिर्वैष्येवापवित्रा॑ ॥ वसनस्तपंश्चाक्षारले॑ ॥ ३॥ प्राक्षण
संधारागतीश्रीता॑ ॥ तैसीउठीदिसेप्रास्ता॑ ॥ द्विंमंदरावक्षिंदुरंवर्वी॑
ता॑ ॥ व्याहीहृस्तविराजती॑ ॥ मत्तांजाम्भनोवारणाभनिवारनावर॑
वीक्षासावरा॑ ॥ तोआक्षर्णविष्यासावरा॑ ॥ वीवेक्षाङ्गंकुवाधीयेता॑ ॥
थुभावेंवरणयेतिष्जन्तजन्ता॑ ॥ वंदेशव्याखविद्यावीपीनया॑
लागीउध्वंप्रदाधरन॑ ॥ यिष्ठाजा॑ रनसर्वदा॑ ॥ हातिंश्वलदेलीका॑
व्रमठ॑ ॥ जोमन्त्रा॑ ननविटेसवक्षात्॑ ॥ तेगंपुखुंदाद्विभक्तप्रेमल॑
जेक्षांतिर्मलज्ञांतवद्यि॑ ॥ जैसेक्षल्पांतविजुक्तेउमाव्य॑ ॥ तैसेखलंका॑
रज्ञांगिंमीरवचे॑ ॥ नहोत्रपुंजगुणीवोवीत्व॑ ॥ तैविंमुक्तहारजोतसि॑ ॥



(3)

हृत्येकाद्विंसुरेष॥ पदवज्जालातोम्प्रांक॥ सुयेरहितनिषंक॥ निजसुखे
 सुरवाउला॥ १३॥ भक्तासीवीद्वयेतिप्रवर्णेण॥ तेंजोआद्वाळीसुंगदेण् व
 ल्यांनविजुवेनिपारेण॥ येवद्वर्तमप्रवृत्ततस॥ १४॥ दीपावलीतेजनमाये
 ॥ तेष्ठिंकुंउलेंशङ्कतिप्रणीप्रये विवरंद्रआयंसर्यो कुंउलरुपेतल
 पति॥ १५॥ मुगुटिंशङ्कतिला॥ लांनपंउपउजठला॥ आदि
 युरुषहासाकारला॥ वस्थावशववेते॥ १६॥ ईसामाहाराजगजवद
 न॥ वरदहुमेष्टाविकीन्हकरीगमद्वयाविजातोपल॥ त्यासीजीवन
 घारीनम्नि॥ १७॥ जैसाउगवतांवरदवंश॥ तेणेंउष्टहुसेकवीहृदयेसमु
 द्र॥ साहीत्प्रभातेंजायार॥ असंग्राम्यदाटलेण॥ १८॥ जयजयगजवदनंजी
 रोपमां॥ अगाधनवलावेतुझीमहिमां तुझीयगुणांवीपाववयासीमां॥

Project of the
 Archaeological Survey of India
 Chancery, Mumbai
 and the
 Rashwanti
 Chandralal, Dhule and the
 Ravidas

(3A)

कैसासरता होइन्यि ॥०॥ कामवेसीमेर येउनिहेवा॥ वैसीन्त्यक्रीलं पी
पीलिवा॥ वैसंब्रह्मां उडवलेलमनयवा॥ भुगोळपशीक्रावेविंहलवि
ल॥ २७॥ वंडां वा वर्षुरावेउटणों॥ वासरभणीसदपृष्ठावणों॥ हीप्रनगा
सवाराघालणों॥ मेघासउषणोंउहक्रांजुकी॥ आ॥ सुरतसुटेंठेविजेव
दीपल॥ मठीयानकासधुपयमिल वाप्रधनुंसीशुष्कत्रुपावेववा॥ आ
गोनियांसमर्थिलों॥ २॥ स्त्रीरसिधुसी प्राज्ञाशिरा क्रनक्राद्रिषुटेंठेविजे
गाय॥ तैसंप्राहृतबोरुंजाया उम्रप्रहस्यवेविंवर्णु॥ परीजोखंह
घेतबाढ़क्रा॥ तैसंनेहेंक्रनि पुरवीभाताप्रनेक॥ त्सीहलामविजयेग्रंथमु
रेव॥ सीष्टिपावोहुयेतुश्चा॥ अर्थात्तानमोजकजोडवकुमारी॥ जेस
दाविलसंवर्कीजीकाण्डी॥ जीव्यावरहेमुवेहिक्री॥ वाचम्यतिसीसंवा



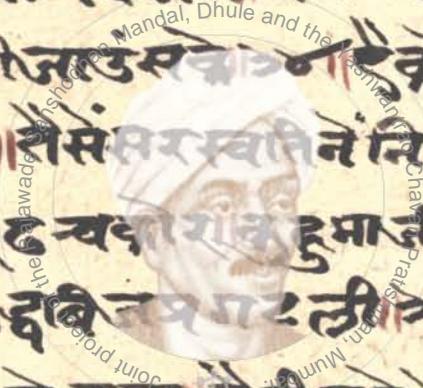
(५)

ह॥४॥ जे आनंद सरोवर मरा ढीका॥ जे वातुर्य चंप क्रक्कडीका॥ जे नि
 जहु पेकी॥ कविका गाने तपर तिर॥ धह पलु श्याविंशीकुमारी॥ ज
 -मांध होय माहांजोहरी॥ आसि नटता वैश्वरी॥ शाकुप दिवै सरंग॥
 अंबेतुं ग्रविहृदया लुभरी॥ विंशि जानं हसागरी बील हरी॥ वागव
 दुई वैसजि द्वारी॥ विरुद्ध सकल सर्वदा॥ वीवेकुहंस्युहृष्टवढ॥ रा
 वरी लुम्सं आसन आवढ॥ राकां दन सुष्ठव॥ तैसं निर्मल निजां गलु
 मे॥५॥ युध्र व्रं चुव्री लुभ्र आंबर॥ दिव्य प्रुक्त लग आळंकार॥ निज बोध
 विलांघे उनि सुखरा॥ गायन करी मीखानं हे॥ ३०॥ ऐकुलं ग्रारहं गाय
 न॥ तन्मये विल्लुं इग्रान॥ अंबेतुम्सं मुंदर त्वय हुन॥ मीन द्रेतन तटलु
 ॥॥ रंभाड वै चरीति लोक्तमां॥ सावित्री आपां मुखर मां॥ लुशीया वातुर्य



(48)

शीसिमां॥ याहेकद्दंनपयति॥ नमा अंवेतुम्भेषुणकोविंवणावे॥ केविंज
कीतिअद्वयुष्टी पुजावे॥ अंबरकौसंमुष्टीतसांटवे॥ पछुवेंबांधवेवा
युद्धेसा॥॥ नक्तरवेउवीविंवजन॥ नगणवेरिंधुवेंतेजीवन॥ सप्ता
वणभ्रेतुन॥ पवाक्त्रवेंवीजाउसक्ते॥ नैकोनिबालकप्तीववने॥ ज
ननीहदइंधरीतिने॥ नैसंसरसवतिने निजहृपेने॥ यातलेंदालोंजी
हरम्पी॥॥ प्रभामेंमनम् ठव्यवागत हुमासीइषिगेहिवीवरा परीस
रस्वतिहृपाळुशार॥ शुद्धिवैन्प्रगल्ली॥ विजेपासुनीवटती
कळा॥ तोंतोंवद्वागसीसोहळा॥ तैमावपथंस्तुताशलीळा॥ वठेजा
गळारसउटों॥॥ हानांवेजानंसउटो॥ उघडिलेयेकौवेलो॥ आतांवं
दुंश्रीगुरपाडलें॥ ज्याम्बेनिप्रगटलेंदिव्यस्तान॥ नैजोप्रज्ञानतिमीरख



(5)

दक्ष। जो प्रगटे वेदांत ज्ञानाद्वा। तो ब्रह्मानंद ग्राहा जहे ख। परमाद्धुरो म
 ही मां ज्ञानावा। अथ। जो क्रांपां उरं गनग रविग्यात। जो भूमक्षभी मां तरीं स
 माधीस्त। तो इति राजमहिसांज जुत। क्रष्णवर्णु शश्रेष्ठै॥४॥ जागटनील
 मशुश्चतीतुर्युषुण। वहुं ज्ञाव लवी। पाद्य आसनं। उन्मत्तते ही निरसु
 न। स्विमुरवीपुणी समधी स्तु॥५॥ याद्य। वैं नृनम सतां मृगां द्वा। द्वीवणां वां
 वुनिविजदेख। कीर्णी वैं वीन। तां य द्वा। महमायं कुरु पुटेनां॥६॥ ज
 रीने त्रें विषान रिसेपदा श्च। कीर्णी मथ ने विषान नि वडेन वनी त। तैसा स
 हुरुवां वुनिपदा श्च। तां न यडे जीवासी। अत्र वरन सतां व्यथ वहूठ मी
 रन सतां द्वाय संध्या। तैसं गुरुल्लपे विषान वर्ष क्राक्षात। तये व्रते संधने॥
 ७॥ अंजनं विषान सां प उनिधान। कीर्णी गाइ त्रीविषान द्वासु ताया। सीमा



Sanjeevani Mandai, Dhule and the Yashwantgad
 Joint Project No. 1
 Sanjeevani Mandai, Dhule
 Number 1
 1995

६१
द्वे वीरामांविष्णु॥ तैसं उक्तविष्णुनन्देः॥ अथ मृत्युन्नत्युप्रनधं
नें सरीजनन्प्य॥ क्रम्हनं नदवामीसवारण॥ आरंभी लीशीरामन्नशाग
हन॥ ग्रंथसंख्या सरीष्टि पाको॥ अथ॥ एसे ऐक्तां सप्रेमकोल॥ कोलीला
श्रीगुरुदयाक॥ वदोपावारणोउतावक॥ मरणां कल्पसाध्यं उगावे॥ अ
किं चातकालागी धां वेसर धर्माक्रीषु धीताखुटें गेश्वरसागर॥ कीक
अवसाजालाद्वोधीताघर॥ अरिदि पर्वें साश्यो॥ तैसाश्रीगुरुदया
सागर्या तेवोंस्तिधला आध्येव रसगसीष्टिसपावेलसावार॥ रामवि
जयेग्रंशहा॥ अथ॥ आतां वें हुसंत सखान॥ जेवैग्यवनीयेपंचानन
जेज्ञानां वरीत्रैवं उद्विष्णोउद्येप्राप्तनसेतया॥ जेभक्तस्तोवरी
त्रैग्यजहंस॥ जेकां ज्ञविधारणहुताद्वा॥ कीं नेय ग्रहस्त्रिविशेष॥ नको

(६)

गवैघहारका०॥ कीजीवपावेग्राषु ल्यास्वपदासी॥ ऐमामोहत्तदेवा
 रतेजोरासी॥ कीतेपं वासीस्वप्रतावेसी॥ पंचभूतासिपलवितिजे॥ ४
 कीतेदैविसंपतिवेनाग्यवंत॥ मुनुषाक्रीतीदरिद्ररहीत॥ कीदयवेष्टा
 दुत॥ गोपुरेन्नायेउन्नावली॥ संतापातेन्नुरपंडित॥ माझेवेलेणांजा
 रुषबहुंत॥ जैपिंसरस्वप्तिपुरुषु भरत्यंत॥ वागविलासदाविति॥ ५
 मूर्यपुटदीपैसादेव॥ की यान्हैमन्हानि श्रीद्वगोदका॥ कीकनका
 द्रीपुटं ज्ञतिसुरेव॥ लासजाठं द्वारपितवेन्ने॥ ६॥ द्वामधेनुसम्मणी
 लेंद्यज्याशीर॥ कीवं द्वासीसीतद्वरीरं ग्राषुत्र॥ द्रव्यतत्त्वव्याहीरेंर
 णार॥ लासीनिंबोद्वासमणील्या॥ ७॥ रत्नापुटदं द्वां वभणिंसमणीलि
 लेतीमाप्नीहेग्रास्यवोति॥ परीतुन्हीप्रीतिबुद्धेविली॥ प्राहृत्याही



Joint Project of the Government of Maharashtra and the Central Sanskrit Mandal, Dhule and the Yavatmal

नवलहें॥५॥ विश्वासि नुष्टों ज्ञापारा॥ परीतुक्लसीवरीप्रीतिप्रारा॥ द्वीप्रा
यवांपिति सीविष्वपत्र॥ चक्षीपाहतां ज्ञावउता॥ ६॥ गयेहासीसपाठी
सीधालितां॥ तिक्ष्वीसर्वावरी वालेस्ता॥ मोलथोउप्रभुज्ञाळंकरउ^७
तां॥ ज्ञांसमस्तायोरदेस॥ ८॥ ग्रवान्तिसुहीसंनप्रभुयोर॥ प्रद्युमांनव
र्वेज्ञापारा॥ वांधवेउमोटं तसमीर॥ वरगंतिअंबरत्रमवेउयै॥ ९॥
साज्ञाणोनिवि-वार॥ प्रद्युधरनिहृतसावप॥ तेनेंकरनज्ञापार॥ मुख
प्राप्तीज्ञासोजण॥ १०॥ ज्ञोगं तस्तावि व्रामयंगी॥ आणवेउयेखदेश्वाणी
सूर्यजातांधरवेलगगानि॥ नहस्त्रं गुणीवोवितेतिल॥ ११॥ काढोजेछेश
विप्रंउलाम्ता॥ मोविजेलैरावतिवेदंत॥ हीगजज्ञाणोनियांसमस्त
॥ यद्वेठाइंद्वांधिजेति॥ १२॥ तुरंगद्वर्सनिंप्रनंजन॥ सर्वत्रकरवेलदृशी

(68)

गमन॥ परीतकले संतां वें प्रहि माना॥ जेब्रहामं हुर्णसा॥ ४॥ तों
 संतबोल तिजानं दधन॥ मनवि वालें तवबोल है कोन॥ आम्ही करं
 इल्लितों रामकथा प्रवदा॥ वरीद दातगा उपरे॥ जेसुंदररत्नेवरन
 विनश्चें प्रहि तगगन॥ वीष्ट रामजी परीउवा॥ तेविं हवांति पुर्णग्रंथ
 झोने दधि किं ग्रांति दया विज्ञेष नयां दितासखुरष॥ वीपरी वारासहीत
 नरेश॥ दवांते सुरसग्रंथता॥ प्राप्ती वनु नलणली बहुत ता
 हीवरी वाढी लें पंचास्तत॥ किं उर्बंठासी जाकस्ता त॥ दृष्टमत्तरभेटला॥
 ५॥ क्रृष्ण अहिं उतां भुमं उंडी वेव वा॥ यमीराजवन्धाली माळ॥ वी
 रोगीया सेरसायण निर्मल॥ प्राक्षमातजो डिले॥ ६॥ अतां बहुत तरके
 निर्वाह जाळ॥ बोले रामकुमारसाळ॥ जेमि शीवृता सां घेनिमाळ॥ मुक्ता



(२८)

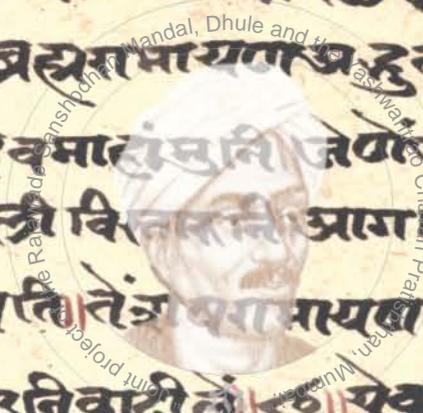
प्रक्षेत्रीशोविति॥७०॥ व्रीक्रोशागरहीं प्रवेश्योति॥ नांदासीरत्ने काढीनि वृउनि
॥ विंसोष्टराकुनि सज्जनो॥ उत्तमगुणास्त्रीक्रान्ति जा॥ ऐसंसंतां च बोलप
रीक्रग॥ ऐक्रोनिक्रहान्तदेशीधरा साक्षांग घालोनि नमस्कार॥ द्युलोसाद
रपरीसाज्जी॥७१॥ आसंभाष्यत्रीतामवरीत्र॥ त्रात कोटीग्रंथसवैस्तर॥
वाल्मीक्र बोलिउपापार क्रशरसमुद्रआपार जो॥७२॥ जो सत्यवती
हृदयेरत्न॥ क्रशिज्जगहृपार द्वारन्तदन॥ तं व्यासोक्तरामायण॥ क्रोपासं
पुर्णवर्णवे॥७३॥ विशिष्टक्रशीते विशीति॥ तं विश्रिष्टामायणामृणाति॥ श्री
शुद्रेन्द्रशीलेन नानसीति॥ शुद्रकरामायणकोलतिते॥७४॥ जो जांजनिं हृदया
विंदभ्रमर॥ तेगंपाहृति श्रीरामवरीत्र॥ क्रशीलेनाट करामायणसाक्षा
रा सापार वरीत्रनि नमुखें॥७५॥ जो परमावैश्वासी श्रीरामासीश्वार

Joint Project of the
Sant Jawadai Sanskriti Mandal, Dhule and the
Shri Parvati Mandir, Mumbai
Number:

(६)

३॥ शक्रारीजनकुबंधु विनिष्पता॥ तेणं राम-वरीत्रकृशीलें पुर्ण॥ विनि
 ष्पता मायण स्याम स्मृति॥ ७॥ जोकृम ग्रहव विहृणु सुता॥ तेणं नारदा
 सीकृशीलें हं वरीत्र॥ तें ब्रह्मरामायण ग्रहुता॥ उमे सिसांगत विवरा
 यण॥ ८॥ जोकृल बोहु कृमातं सुलि॥ तेणं जनक निधीष्ठारी लाभा आन्म
 नी॥ तेणं रामकृष्ण ठावित्री विनामनि आगत्तिरामायण ग्रहुति त्या॥
 ९॥ जोगं द्रवृशीसर्वप्रति॥ तें ब्रह्मरामायण बोलति॥ आध्यात्मरामायण
 बोलति॥ कृष्णनिनिव उनिकाढी लो॥ १०॥ यवद्वौवरामायण सत्य आग
 प्ररामायण यवद्वौलता॥ कृमरामायण ग्रहुता॥ कुर्मपुराणी बोलिछें॥ ११
 स्त्रिदरामायण आयारा॥ यवद्वौलति रामायण परीकृरा॥ द्वाष्ठि कामवंडि
 सविस्तर रामकृष्ण कृष्ण येली॥ १२॥ रवि आरुल संवाद॥ तें ग्रहणरा

७



प्रायणा प्रसि हौ॥ पद्मुगाली अगाधा॥ पद्मगमा यथा वर्णीते॥ न्॥ भरथरा
 मायणा वांगले॥ ये त्रिपर्मगमा यणा बोलिले॥ आश्रीयं गमा यवक्षीले
 ॥ बगदलु प्रस्त्रिप्रति॥ इन्॥ सुलापा सुनिहु क्याद्या॥ कै प्रथवर्णवति
 लतत्वता॥ स्यामाजीवा लिक्नाटकाधारें ग्रं या॥ रामदेवजये पाठरीक
 शुं॥ देहु॥ स्वं हरां मायं वां प्रांपां चं यं वं यौं लं स्त्रियां मायं वां परीकेरं द्रां छीका
 खं दिं संविंहं तरं रं नं दं दं अं दं शं यं ति॥ अं रं विं ओरं वं सं वां दं ते अं रं पं
 गं मां यं पं पं सि ं हं॥ सप्रस्तुक्वदि रनम ज्ञान॥ जो जगहु रुआ आपन्निं व
 र॥ जेगेमंते उठेहो निसप्रग॥ उहमार्गवाटविला॥ एषु विं यवस्त्य
 वतीकुमर॥ तैसाक्षर युगीश्रीशं द्वर॥ जो ज्ञानां वस्तु युद्र॥ जगहो हुए
 देल्लाजे यों॥ उ॥ सद्वच्छमते उठेतुन॥ सन्मार्गवाटविलायरोपुरा॥ सद्व



११

क्रमनवाहि जंतुक्रपुर्णजापा॥ ब्रांकरमीकृगतिसे॥ सखलप्रसवा
 हीदरीदी॥ श्रांकरश्रीमंतपश्चीदरी॥ सन्मासदैस्थानिधीरी॥ जेषोंस्तुपीत्री
 विधियुक्ता॥५॥ ग्रावदमतकाहि रजरिया॥ ब्रांकरत्यावरीरघुवीर॥ क्रींका
 रववधीयादवेंद्र॥ ग्राति उहि नसाह्ये॥६॥ लेसावांकराष्ट्रायेसकल्कुम
 संदेहस्ताल्काल्कु॥ प्राप्याक्षाणो प्रपद क्रमद्वाश्रीधरभ्रमरेवंदीछे॥७॥ श्री
 धरान्वाहीद्राकारा॥ यासनपर रोत् रथाम्॥८॥ मदसदमाहित्रविंद्र॥ प्रशंशजा
 पारजयाच्चे॥९॥ जोश्रंगारवतिकाविहेंगमजापा॥ तोजयदेवपद्मावतीर
 मणा॥१०॥ यामीक्राव्यद्रवायाहन॥ यंत्रितजनतटस्तहोति॥११॥ जावेदांससी
 रार्णविवामिन॥ लेषोंविवेकमिंधुनिमित्राखुण॥ तोषुकुंदराजगुणानिधान
 ॥१२॥ तयाच्चेन्द्रायावंदेल्ले॥१३॥ तसावयाजगसमग्र॥ उत्तंजवतरल्लारमांक

१९
॥३०॥ गीतर्थकेवलासस्थार॥ तोज्ञानेश्वरज्ञाहु सृष्टा॥ जोभानुदासकुर्भुष
व॥ प्रतिष्ठापनवासिपरीपुर्वस्यादेयेकनाशंग्रंथसुण॥ बहुः सातक्रशीरे
लोऽधि॥ जेवलुर्यगजधानि चेकक्षस॥ मुक्तेश्वरमुद्गलदास॥ उपासांग्
यपाहतांविश्रोष॥ ब्रह्मानन्देऽन्वेदव्याप्ता॥ ज्ञासाव्यं उंडातेजपोती॥ तैसेव
देवलवामनस्वामि॥ उपासीमावरवनतंगभुती॥ मंउकावरीआखुर्व॥
४०॥ हृष्टादासजयराम॥ ज्ञात्रांतिदपुंनिजधाम॥ ज्ञात्वेग्रंथज्ञानभरीत
यरम॥ जेनिधिमत्रस्वारी॥ श्रीरामउपासकवेष्वल॥ जोभक्तीसगोच
रिष्वामरात्॥ तोगमदासमाहृष्णनिर्मल॥ प्रतिप्रब्रह्मावीजनां॥ ४०॥
ब्रह्मानन्दस्वामि वा बंधुस्त्यगामतपावेंगलाष्ट॥ उपासीकाविनास
मस्ता॥ आपारजनउद्दरले॥ आत्माप्रासोतस्मस्तक्रविवर॥ आवरेब्र



१०

स्त्रान्दरपसाकारस्यस्य ग्रन्थं वारतण्डीधरं सुलोद्धावावरं ग्रंथा
 सी॥ न। रविकुञ्ठीयवत्सोनिरघुविरा॥ दैसंकेलेतीदृप्त्वरीत्रधन्यस्यावा
 लिक्रप्त्वेवक्र॥ क्रशाभापारवोलित्ता॥ तेवटीतांक्षीगमन्वीत्रध
 न्यतोवालिक्रप्त्वित्र॥ तोपादेवत्रवर्णाहेतापार॥ ऐक्रामादरगोष्टे
 ॥ ए॥ वालिक्रप्त्वित्रिजमत॥ सज्जानि प्रापुत्राजावारप्रज्ञांपवित॥ द्वि
 रातसंगेवाटपारित॥ अर्तीत् त्तविश्यांधधमाहांदुर्धरक्रानन॥ देव
 तांभयामीतहोयेमन॥ पर्वतहीमाजीस्त्रवद्वरन॥ सहपरिवारेवंवसेते
 शंध॥ नोंवंतेहादत्रगावेपर्यंत॥ पाठतिमात्रानिवाटपारित॥ व्रेष्टाब्रह्म
 हत्याषसंस्यात॥ नाहींगणीतइतरजीवा॥ मठधरावयात्रातीवक्र॥ दै
 सहेउनिंसात्तिक्र॥ विंसुत्राकालातीविजळक्र॥ वैसेजपतज्यापरी॥ की

१०



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com